

128

Mantra
i mantra

ल१ इत्तानि ल१ सिध म१ मनु धि ल१ गुलद्र ल१ हल
 उ ल१ सि लाल म१ लाल म१ लाल म१ लाल म१ लाल

ज ध्व ते लाल भाग लाल ते मीन पु क था

स्वस्ति

लाल म१ इत्तानि

लाल



1854 I

नै नै नै नुतखाहा ॥ ध्व मंत्र धाल १ श्रक्षेजपलपं
हो ले नु तसा धना याय मत्र ध्व जुल ॥ ४ ॥ ॐ ॥
ॐ वै जु म हां काल हां हां हां हिं हिं हां ऊं ऊं ऊं फे दू
खाहा ॥ धो मत्र धाल १ श्रदेतगोल मास जपलपं हो
ले म तुर या दु ग टो क धु ले ॥ ४ ॥

ॐ रूं रूं रूं तिषार श्र चं नु नै र वा ये पो दु कां
धो मत्र धाल ३००० जपया तसा नै र व मा दूर स तसा
इ व जुल तारं मारं जारं नं थ जुल ॥ ४ ॥ नमो ॥ ॐ ॥
नम ॥ म हां काल या जप मत्र धो जुल ॥ ४ ॥
ॐ कां लिं कां लिं कां लिं मं हां कां लिं निं रं कां लिं खा हा ॥ कां लिं

जप मत्र ध

ॐ नमो श्री कं का लि दे वि या आ ग्या म गी का सि या आ ग्या ७ म गी
मे र व या आ ग्या स म सौ व न्ध दं दं सि द्ध ४ धार ३ म
शान व ध क व च ४ ॥ ॥ ॐ (वृत्ता इ नि या आ ग्या ४
स र्व पा नि ला हा ति जो दु वः व स्य त य दं सि द्ध ४
धार ३ स र्व व से ॥ ॐ क द स्या हा ४ ॥ धार ३ २४ जाय मुना
पत आ यत मा म ४

ॐ पि र प्र वो रि या का ला म रुं के त क मा रुं पु र्व दि सा मे रुं
च ले दा हि न नि वो क सि दो द जे व न्ध क रे र रु त कि त पि मे
रि ज ग्ती इ म्भ र कि वा ॥ ध्यो म त्र धार ७ स म स जार न या ४ ॥
ॐ नु रि नु रि म हा नु रि मा हा ज त वि दा नि नो स ठि जो गि त रु हा
त कि त कि म्भ रि ज ग्ती इ म्भ र कि वा ॥ ध्यो म त्र धार ७ स म स जार
न म ॥ ॐ ये च व रु क द स्या हा ॥ २०२ जाय त्पु र नि वा
रण म ४

१ श्री ध्वत्र (वृत्तान्तिया) तुल जपमंत्र धार ३०००० जपया तसा
ज श्री त्रमंत्र सिद्धि साइ धा ४०००० जपया तसा दरसन लाइ
श्री म जो श्री या तुल जपमंत्र ध्वजुल ॥ ॐ ॥ ॐ नमो श्री गते साय ४
ताल तुल सा चोस तथा व न्वन के मिहि नं जु वया निह ॥ निमराः
ननाप श्याय ॥ पुष्पा नक्षेत्र लाघु नू श्वेत अपरादित स्वाः
नया हा का या व ॥ ग्वल च न्द्र स मागत निमा ॥ चिक न स त
मा व त य श्री ध्व रं ती रिया सिल क चो ॥ न्य जुल ॥ ध्व चि क्रुः

रघाल स तु य स व मोहन तुल व स्य विहि ४ ॥ म हा वार ध्व न
कि स म म ल का या व कु पं न के ध्या थ म न मा ला व जु ल ॥
सुं सु प चिं य हि फा मा हि ग्व ल च न्द्र स मागत तिस व मो ह
जिल स्या न, जिल स्या न या हलः म नुः ह ल डुः वि हलः इ का
प लकाः स मागत न चु र्न या हा व लिंग स पा य पु सं हा जु य
नि व स्य ४ ॥ जिल स्या न या हा नि हा व लिंग स पा य पु सं
ग या य तो ल ते म फ म केश ॥ ध्व न क्षेत्र ध्व नु च स कं हा

लिङ्गावजत्रयनेमजाकजादेके ॥ अजमोलः हरः ॥
सलमापि भवते स्रजाग ॥ वृत्तापूजाया यन्त्रमुक्तिकादयकाव
सिधनपूजावन्दनमतपात्रपूजायस्वनरवलि कायावसिला
नित्यपूजाया माला ॥ ३ ॥ उं नमो नृसिंहाये नमः ॥ ३ ॥ इकट्ठं
विकटवदरविदारनृसिंहाये नमः ॥ ३ ॥ इकट्ठं नविकटमर्दन
३ ॥ उं नृसिंहाये नमः ॥ ३ ॥ उं नारविं नु जमरमहामुनिका लन
हि ॥ ३ ॥ नृसिंहाय नमः ॥ ३ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो च नृवाधौ नृमवाधौ ॥ नृवाधौ नृकासवाधौ ध
रतिवाधौ नृदिपावाधौ नृदिनदिपावाधौ कालिका
मालिकादेविवाधौ नृसिंघदेवेतामस्मात्पुनरुदा नृमा
जादादिराष्ट्रवठिराष्ट्रलोहाद्यनलेहो निमासं भुत
प्रेतदादिनिवोक्तसिद्धवरादुत्तावा इवोत्तास्यमशान
वाहो नमो च नृवाधौ नृमवाधौ नृकासवाधौ ध
श्रीगोरापादेतिवाचा ॥ ॥ ॥ ॥ नृसिंघमत्र ॥

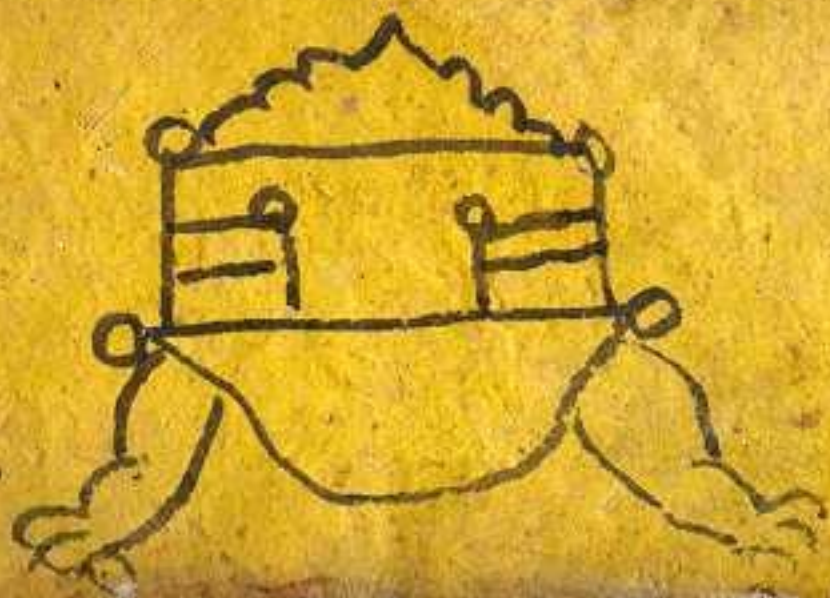
ॐ नमः श्री गणेशाय विष्णवे विष्णवे उक्तं कात्रेस करि उदया
वायुपैषिनि कुकुकागहं सागिमशानके मत्स्यकरं मृगप
गगवलति गगपलितगगजागारे न सिंधिनी त्वार
घटमेन्द्रावमहातको वाचा सागिजा मृथनृ तिघना
जाय ॥ ॥ तज्जीनका लसी नृपा इव द्याया वाजं निजे संतिउ
सरानि धैय रुडरिखु तारिदेवगणपतिगह ज्येगणपतिनदि
सा वाधौ पाताल वाधौ आकास वाधौ एव वाधौ तत वाधौ भुत

वाधौ उ सतवारिचायेदा वाधौ जलजत्र वाधौ धलचक्र वाधौ ज
रिचिजालंधरि वाधौ भद्र ठकोटिभुतावरि वाधौ तितीस्कोटि
देवता वाधौ मंत्रलोपितर वाधौ सदाखजे तिं गावाधौ जोरिवा
धौ जेरि वाधौ धठारि वाधौ मनिपारि वाधौ तेरिति वाधौ तावो
रिनी वाधौ उ चरणघृणीया ममनसरनीया वाधौ सारसिचि
रस्यादेवा गुरुनिसिद्धि विराहनु मन्ताचिरस्या श्री गुरुजा
दति फुहो ॥ धार ३ थो मंत्र देव भुत मंत्रि चार भु वया लं

ॐ ह्रीं स्व ह्रीं स्व ह्रीं स्व ह्रीं इ ह्रीं इ ह्रीं लक्ष्मिणा रां य
नमस्वाहा ॥ यो मंत्र धार ३०० धार १००० धार
३०० धार १०८ ॥ ॥ ॥ लक्ष्मि नारायण को जपः
मंत्र ॥ ॐ देवदेवि ॥ उमिता स्वादि ह्रीं फट् स्वाहा ॥ ध्ये म
त्रधार २१ रुडाक्ष म जप ल पावु को म के त व के च मार भ्या

1854

I





थ जगत्पद्मपद्मसूक्तं धनवीयस
मस्तनद्याथ शिवनामनगयना
लसलस ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ थ
मंगलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०८

क्रीं प्रो क्रीं ह्रीं क्रीं थ मन्त्र त समस्त जय

लयं न के व स

१	५	२	७
३	६	४	५
७	२	६	०
४	१	७	३

सर्वसिद्धि जगत्पद्मसूक्तं धनवीयस ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०८ ॥

॥ १०८ ॥ थ मन्त्र त समस्त जय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वे किं पूज्यन्ते तं का हा गयत्र कह न व
ह लं का न कू न कं का लि टं वी रू रू श्राम्भ ॥ ४ ॥ धर्म नु धल ॥
॥ वा न भ नि च न म ग ल वा न षू द्र या य मा ल ॥ कृ स ग द ल ग ल
मा ड म दा हा र न स च न हा क ल का या डी स रं त या धा या ह ० ०
लो डी गाय ह रू त ह्या य म नु ध श ल ॥ ४ ॥

माधुशृङ्गकल्पलेपिते॥ मुरं गल्यावनुःवाहि
रुकावाका फल नुकातिकटुकाश्

३	४	३	२
५	४	५	६



भोजत्रभुजपत्रो
 लन्नन्नु नचोयसिध
 नपुनेद्येलकलिस
 पुङ्ग तयनामकाया
 लन्नन्नु नचोयसिध

आपः ईकाः परका ध्यते जयलपंमिस दुमधार २१
होलेफायकलहजुईव ॥ ४॥ ॐ गुरुआ ग्याउंकाः
लिका लिहाहाहदेविश्चरकिवाचा ॥ ध्यमवनजा
किजयलपंनकासह नहिइव जुलथोहिकायलस
बुलावश्चंजलफयधोश्चंजलनरलेमेवनमषानके

पुषेनक्षत्रखनुपाउपोयाहाकायावहयत्तुसत
याववनेशयाप्रससस्त्रनद्यालमजुव ॥ हलानक्षत्र
सज्यालावोयाहाकायावहयत्तुसथडाववनेशग्रामसः
मिमयाध्यंतेजदयीवजुल ४ ॥ ॐ ॐ जं वं जं वं जं वि ॥
जोधासेवजुकाधाउउलतावजुउजोहिकउजाउ
राहिताराधोहनुमत्रविरवाउंराखोनरसिंघविरपिदे
राधोदिगपालश्रुगिराधोश्रुगिनेतालशुहकिसक्तिमेरेजगति

कुलसंनारप्रारकिवाका